RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 20 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 29 जुलाई, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 20, 26-29 जुलाई 2018 तदनुसार 14 श्रावण सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सभा

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि।
ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचसः।।

-अथर्व० ७।१२।२

शब्दार्थ-हे **सभे**=सभे! **ते** = तेरा **नाम** = नाम **विद्म** = हम जानते हैं। **वै** = सचमुच तू **नरिष्टा** = मानव-हितकारिणी **नाम** = प्रसिद्ध **असि** = है। **ये** = जो **के+च** = कोई **ते** = तेरे **सभासदः** = सभासद् हों **ते** = वे **मे** = मेरे लिए **सवाचसः** = वाणीयुक्त, बोलने वाले **सन्तु** = हों।

व्याख्या-सभा, समाज, सङ्गठन बनाकर कार्य साधना नया आयोजन नहीं है। यह अत्यन्त पुराना है, उतना पुराना, जबसे इस संसार की रङ्गस्थली पर मनुष्य आया है। उसे यह बोध भगवान् ने कराया। जिस सङ्घ या व्यक्ति ने अपने प्रतिनिधि चुनकर सभा में भेजे हैं, वह मानो कह रहा है-**'विद्म ते सभे नाम'** = हे सभे! हम तेरा नाम (यश) जानते हैं। सभा में बैठने योग्य को 'सभ्य' कहते हैं, 'सभ्य' के चाल चलन को 'सभ्यता' कहते हैं। तनिक ध्यान दीजिए, तो स्पष्ट भान हो जाएगा कि सभ्यता सङ्गठन के बिना नहीं हो सकती। सभा का एक अर्थ है प्रकाशयुक्त, अर्थात् सभा एक ऐसे जनसमुदाय को कहते हैं जिसमें सब मिलकर ज्ञानपूर्वक और ज्ञानरक्षक कार्य करते हैं, छिपकर अन्धकार में कार्य नहीं करते। इसीलिए आगे कहा है-**'नरिष्टा नाम वा असि'** = तू सचमुच नरहितकारिणी है।

इस छोटे-से मन्त्रखण्ड में सभा का उद्देश्य बता दिया गया है। यदि सभा से जनहित न हो, तो वह सभा नहीं है, उसे तोड़ देना चाहिए। उत्तरार्ध में सभासदों के कर्त्तव्य बताये गये हैं-**'ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचसः'** = जो कोई तेरे सभासद् हों, वे मेरे लिए बोलने वाले हों। यदि कोई सभासद् सभा में जाकर चुप रहता है, बोलता नहीं, वह वेदविरुद्ध आचरण करता है। मनुजी ने कहा है-**'सभां वा न प्रवेष्टव्यं वक्तव्यं वा समंजसम्'** [८।२३] = सभा में प्रवेश नहीं करना चाहिए, प्रवेश करने पर युक्त= उचित बोलना चाहिए। अन्यथा-**'अब्रुवन् विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्बिषी'** [८।१३] = न बोलता हुआ अथवा उलटा बोलता हुआ मनुष्य पापी होता है।

जो ढोंगी सभा में बैठकर पक्षरहित Neutral होने का दम्भ करते हैं, वे अवश्य पापी हैं, क्योंकि उन्होंने अपना अथवा निर्वाचकों का पक्ष न बताकर अन्याय और विश्वासघात किया है। उन्हें चाहिए कि-**'सभां न प्रवेष्टव्यम्'**-वे सभा में जाएँ ही नहीं। जो इस प्रकार के पक्षहीन दम्भी हैं, मनुजी उनके सम्बन्ध में कहते हैं-**'यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन च। हन्यते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासदः'** [८।१४] = जिस सभा में सभासदों के देखते-देखते अधर्म से धर्म और झूठ से सच मारा जाता है, उस सभा के सभासद् मरे हुए हैं, अतः वेदभक्त सभासद् कहता है-**'चारु वदानि पितरः संगतेषु'** [अथर्व० ७।१२।१] = हे पूज्यो, पितरो, City fathers! सङ्गतों = सभाओं में मैं सुन्दर बोलूँ।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

तवोतिभिः सचमाना अरिष्टा बृहस्पते मघवानः सुवीराः।
ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्त्रदाः सुभगास्तेषु रायः।।

-ऋ० ५.४२.८

भावार्थ-हे सर्व ब्रह्माण्डों के स्वामिन्! परमात्मन्! जो धर्मात्मा आपके सच्चे प्रेमी भक्त हैं, उनकी आप सब प्रकार से रक्षा करते हैं। वे सब प्रकार के दुःख और कष्टों से रहित हो जाते हैं, धनवान् और सुपुत्रादि सन्तान वाले होते हैं, और धनवान् होकर भी सब पापों से रहित होते हैं। उस धन को उत्तम महात्माओं का अन्नवस्त्रादिकों से सत्कार करने में खर्च करते हैं, और धार्मिक संस्थाओं में, वेदवेत्ता महानुभावों के वास करने के लिए, अनेक सुन्दर स्थान बनवा देते हैं, जिनमें रहकर महात्मा लोग प्रभु की भक्ति करते और वेदविद्या का प्रचार कर सबको प्रभु का भक्त और वेदानुकूल आचरण करने वाला बनाते हैं। ऐसे धार्मिक पुरुष ही सौभाग्यवान् हैं, ऐसे आचार-व्यवहार करने वाले उत्तम पुरुष के पास ही, बहुत धन धान्य होना चाहिए।

अस्य हि स्वयशस्तरं सवितुः कच्चन प्रियम्।
न मिनन्ति स्वराज्यम्।।

-ऋ० ५.८२.२

भावार्थ-सृष्टिरचना कर्ता परमेश्वर का स्वराज्य सारे संसार में फैला हुआ है और वह स्वराज्य प्रभु के बल और यश से फैला है। उसके नियम अटल हैं, और सबके प्रीति करने योग्य हैं। उस जगत्-कर्त्ता के के सृष्टि-नियमों को और स्वराज्य को कोई नाश नहीं कर सकता। वास्तव में अविनाशी परमात्मा का स्वराज्य भी अविनश्वर है। मनुष्य तो मर्त्य अर्थात् मरणधर्मा हैं इस मनुष्य का राज्य भी नाशवान् है, कदापि अविनाशी नहीं हो सकता।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नःसन्त्वोषधीः।।

-ऋ० १.९०.६

भावार्थ-हे परमात्मन्! जैसे सदाचारी पुरुष के लिए सब प्रकार के वायु और सब नदियाँ सुखदायिनी होती हैं। ऐसे ही आपके उपासक जो हम लोग हैं, उनके लिए भी सब प्रकार के वायु सब अन्न सुखप्रद हों, जिससे हम सब लोग, आपकी भक्ति और आपकी आज्ञारूप वैदिक धर्म का सर्वत्र प्रचार कर सकें।

बेटी नहीं होगी तो सृष्टि नहीं होगी

ले.-डा. अर्चना प्रिय आर्य, ताराधाम कॉलोनी, टाऊनशिप, मथुरा

भारत (हिन्दू समाज) के अंत का घंटा घनघोर आवाज में घनघना रहा है और हम भारत के लोग पूरी तरह बेखबर हैं। हमारे देश में मातृशक्ति को कमजोर किया जा रहा है। नारी स्वतंत्रता के नाम पर चलाए जा रहे तथाकथित आधुनिकतावादी आन्दोलन यदि इसी प्रकार चलते-चलाये जाते रहे और काल की पगध्वनि को अनसुना किया जाता है तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि हमारे देश में नारी प्रजाति लुप्त हो जाए और भारत की भूमि तो शेष रहे, किन्तु हम भारत के लोग समाप्त हो जाएं। जिस तीव्र गति से और जिस अनुपात में देश की कन्याओं की जन्मदर गिर रही है वह अत्यन्त अशुभ संकेत है। स्त्री ही नहीं होगी तो पुरूष भी नहीं होगा।

जननी को जन्म ही नहीं लेने दिया जायेगा तो जगत का सृजन संरक्षण कौन कैसे करेगा? आधुनिक प्रगति की अधोगति यह है कि वह हत्यारों और पापियों को पाल-पोष रही है, पाप को बढ़ावा दे रही है। मानवीय संवेदनशीलता का शोषण कर रही है। केवल धन-लोभी इंसान बना रही है। यहाँ करूणा के लिए कोई संस्थान नहीं है। यहाँ वात्सल्य अनजाना अनाथ है। यहाँ पुत्री पाप का परिपाक और परिणाम है। इसलिए उसे या तो जन्म ही नहीं लेने दिया जा रहा है या जन्म के बाद विभिन्न तरीकों से मार दिया जाता है कि वह बड़ी होकर पिता की संपति में भागीदारी न कर सके और दहेज का दानव पिता की संपति को न निगल सके।

कन्या भ्रूण हत्या करने वाले यह नहीं जानते कि वे मातृगर्भ में कुलबुला रहे केवल किसी मासूम की हत्या नहीं, आत्महत्या भी कर रहे हैं। वे यह भी नहीं जानते कि यदि वे 'नारायणी' को मारेंगे तो उन्हें 'नारायण' का कोप भाजन बनना पड़ेगा। वे इस सत्य को अनदेखा-अनसुना कर रहे हैं कि यदि 'महालक्ष्मी' की छटा के साथ छेड़छाड़ करोगे तो कंगाली ही हाथ लगेगी। भ्रूण हत्या वह भी कन्या भ्रूण हत्या को हमारे देश के संतों शास्त्रों ने महापाप तक कहा है। यह हमारी सर्वज्ञात और विश्वसनीय सौंगध थी कि यदि मैं यह गलत कार्य करूँ तो मुझे भ्रूण हत्या का महापाप लगे।

यह कैसी विडम्बना है कि भ्रूण हत्या के महापाप तक मानने वाले देश में कन्या भ्रूण हत्या करना आधुनिकता का पर्याय और सामाजिक फैशन बन गया है। एक अमेरिकी शोधकर्ता कार्लटन ने इस आसुरी क्रूर कुकर्म के संदर्भ में अनेक प्रश्न पैदा कर दिये हैं। वे पूछते हैं कि इसके लिए जिम्मेदार कौन है ? इस पाप कर्म की सजा किसे दी जानी चाहिए स्त्री को या पुरूष को? और अन्त में कहते हैं कि पति-पत्नि सहित उस डॉक्टर या कर्मचारी को दी जानी चाहिए जो भ्रूण हत्या या गर्भपात के लिए जिम्मेदार हैं। जनगणना के पश्चात जो आँकड़े सामने आए हैं, उसने अब देश के आम आदमी को भी चिंतित कर दिया है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कन्या भ्रूण को नष्ट करने का जघन्य पाप मनुष्य जाति और विश्व जीवन को समाप्त कर देने वाली आत्मघाती दुष्प्रभाव या दुष्प्रवृत्ति से उपज रहा है।

यह केवल व्यक्ति-दोष से ही उत्पन्न पापाचार नहीं है। यह व्यवस्था जनित दोष भी है। इसके निवारण के लिए व्यवस्था के दोषों की ओर देखना होगा। इस पापाचार को हिन्दू समाज में अधिक पनपता देखकर यह साफ समझ लेना चाहिए कि हिन्दू समाज अपने आपसे सबसे अधिक अनजान बना हुआ है। इसकी आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था विभिन्न कारणों से टूट बिखर गई है।

पाठको! जीजाबाई, लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई जैसी वीरांगनाओं की भारतभूमि अब पुत्री विहीन होती दिखाई दे रही है। आँकड़े इस बात की गवाही देते हैं कि इस देश में बेटियों की संख्या में निरन्तर गिरावट रही है। जनगणना के आँकड़ों से पता चलता है कि बड़ी-बड़ी परियोजनाओं और कार्यक्रमों के संचालन के बावजूद छह वर्ष तक की उम्र के बच्चों के मुकाबले बेटियों की आनुपातिक संख्या में जबरदस्त कमी आई है। इस समाज में आज जननी को जन्म का अधिकार नहीं दिया जा रहा है। वह जन्म नहीं ले सकती है। समाज में ज्यादातर लोग बेटियों को पहले तो पैदा ही नहीं होने देते और अगर बेटी पैदा हो भी जाती है तो उसकी निर्मम हत्या कर दी जाती है। पेट से बाहर आ जाये उसकी करे तो हत्या और पेट के अन्दर ही मार दें तो अवॉर्शन। ये अजीब कानून है इस देश में। हमने इतिहास में पढ़ा है कि पहले जो बेटियों की हत्या कर देता था तो हम उसे राक्षस कहते थे परन्तु आज ये सफेद-सफेद चोगा पहनकर डिग्रियां लेकर बच्चियों की हत्या कर देते हैं बेटियों को मार देते हैं उन्हें हम डॉक्टर कहते हैं ये राक्षस नहीं है और अगर यही चलता रहा तो आप इस समाज को बचा नहीं पाओंगे।

वाह रे! माँ-बाप कहलाने वालो। तुम एक गर्भस्थ बच्चे को तड़पा तड़पाकर मार रहे हो। वर्ष 1984 में 'नेशनल राइट्स टू लाईफ कन्वैन्शन' कनास सिटी मिस्सौरी में हुआ था। इसी सम्मेलन की एक प्रतिनिधि Mrs. Aandy Ressal ने Dr. Bernard Nathansonds द्वारा एक गर्भपात की बनायी गयी अल्ट्रासाउण्ड मूवी का जो विवरण दिया था वह उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है-

गर्भ की वह मासूम बच्ची अभी दस सप्ताह की थी व काफी चुस्त थी। हम उसे अपनी माँ की कोख में खेलते, करवट बदलते व अंगूठा चूसते हुए देख रहे थे। उसके दिल की धड़कनों को भी हम देख पा रहे थे और वह उस समय 120 की साधारण गति से धड़क रही थी। सब कुछ बिल्कुल सामान्य था किन्तु जैसे ही पहले औजार (सक्शनपम्प) ने गर्भाशय की दीवार को छुआ, वह मासूम बच्ची डर से एकदम घूमकर सिकुड़ गयी और उसके दिल की धड़कन काफी बढ़ गयी। हालाँकि अभी तक किसी औजार ने बच्ची को छुआ तक भी नहीं था लेकिन उसे अनुभव हो गया था कि कोई चीज उसके आरामगाह उसके सुरक्षित क्षेत्र पर हमला करने का प्रयत्न कर रही है। हम दहशत से भरे यह देख रहे थे कि किस तरह वह औजार उस नन्हीं मुन्नी मासूम गुडिया सी बच्ची के टुकड़े ऐसे काटे जा रहे थे जैसे वह जीवित प्राणी न होकर कोई गाजर-मूली हो और वह बच्ची दर्द व पीड़ा से छटपटाती हुई सिकुड़-सिकुड़कर घूम-घूमकर तड़पती हुई इस हत्यारे औजार से बचने का प्रयत्न कर रही थी। वह इतनी बुरी तरह डर गयी थी कि एक समय उसके दिल की धड़कन 200 तक पहुँच गयी। मैंने स्वयं अपनी आँखों से उसको अपना सिर पीछे झटकते व मुंह खोलकर चीखने का प्रयत्न करते हुए, जिसे डॉ. नैथान्सन ने उचित ही साईलेन्ट स्कीम मूक-चीख या मूक पुकार कहा है, स्वयं देखा। अन्त में हमने वह नृशंस व वीभत्स दृश्य भी देखा है जब सैंडसी उसकी खोपड़ी को तोड़ने के लिए तलाश कर रहा था और फिर दबाकर उस कठोर खोपड़ी को तोड़ रहा था क्योंकि सर का वह भाग बगैर तोड़े सक्शन ट्यूब के माध्यम से बाहर नहीं निकाला जा सकता था। हत्या के इस वीभत्स खेल को सम्पन्न करने में करीब 15 मिनट का समय लगा और इसके दर्दनाक दृश्य का अनुमान इससे अधिक और कैसे लगाया जा सकता है कि जिस डॉक्टर ने यह गर्भपात किया था और जिसने मात्र कौतूहलवश इसकी उसने फिल्म बनवा ली थी, उसने जब स्वयं इस फिल्म को देखा तो वह अपना अस्पताल छोड़कर चला गया और फिर वापिस नहीं आया।

गर्भस्थ शिशु की हत्या व वेदना को दर्शाने वाली इस फिल्म साइलैन्ट स्क्रीन को जब भूतपूर्व अमरीकी प्रेसिडेन्ट श्री रोनाल्ड रीगन ने देखा तो वह इससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने प्रत्येक अमरीकी संसद सदस्य से इस फिल्म को देखने का अनुरोध किया। श्री रीगन एबोर्शन कानून को बदलने के इच्छुक थे।

मदर टेरेसा ने कहा कि गर्भपात गर्भाशय में बालक की हत्या ही है। उन्होंने विश्व की सरकारों से गर्भपात को कानून रद्द कर जाने का अनुरोध भी किया था।

Stoaway New Delhi 12.2.94 में छपे समाचार के अनुसार मदर टेरेसा ने अमरीका में बढ़ती हुई हिंसा का सम्बन्ध भ्रूण हत्या से जोड़ा है। उन्होंने अमरीकी राष्ट्रपति क्लिंटन, उपराष्ट्रपति गोरे उनकी पत्नी व अन्य तीस हजार श्रोताओं के समक्ष भाषण में कहा-

"That a mother can kill even her own child, How can we tell other peopler not to kill each other

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

गुरू पूर्णिमा का महत्त्व

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। पूरे भारतवर्ष में यह पर्व बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। प्राचीन काल में जब विद्यार्थी गुरू के आश्रम में नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण करते थे तो इसी दिन श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर अपने गुरू के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करने के लिए कुछ भेंट स्वरूप पदार्थ लेकर गुरू के चरणों में उपस्थित होते थे। गुरू शिष्य के द्वारा श्रद्धा के साथ अर्पित की गई वस्तु को प्रेम से स्वीकार करते थे। इस प्रकार यह परम्परा अनादि काल से चलती हुई वर्तमान में गुरू पूर्णिमा के रूप में प्रसिद्ध है। गुरू को अन्धकार से हटाकर प्रकाश की ओर ले जाने वाला कहा गया है। हमारा इतिहास आदर्श गुरू एवं आदर्श शिष्य की परम्परा के लिए प्रसिद्ध रहा है। गुरू अपनी सम्पूर्ण शक्ति के द्वारा शिष्य के अन्धकार को दूर करता था तथा शिष्य अपने गुरू को दिए गए वचन की पूर्ति के लिए अपने आपको सर्वात्मना समर्पित कर देते थे। इसी गुरू शिष्य परम्परा के द्वारा वेदों का ज्ञान अद्यावधि सुरक्षित है। परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को चारों वेदों का जो ज्ञान दिया था वह लिपिबद्ध होने तक इसी गुरू शिष्य परम्परा के द्वारा चलता रहा। महाभारत के रचयिता महर्षि वेद व्यास का जन्म भी इसी दिन हुआ था इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। हमारी संस्कृति में अनेकों ऐसे गुरू और शिष्य हुए है जिन्होंने अपने तप और त्याग के द्वारा आदर्श प्रस्तुत किए हैं परन्तु यहां पर आधुनिक काल के महान् गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द और उनके विलक्षण शिष्य आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का उदाहरण आपके समक्ष रखना चाहता हूँ जिन्होंने अपने तप,त्याग और पुरूषार्थ से समाज को एक नई दिशा दी है।

गुरू विरजानन्द और स्वामी दयानन्द का नाम आते ही एक आदर्श गुरु और एक आदर्श शिष्य का चित्रण आँखों के सामने प्रस्तुत हो जाता है। गुरू विरजानन्द जी का जिस प्रकार का विलक्षण व्यक्तित्व था वैसा ही उन्हें विलक्षण शिष्य दयानन्द के रूप में मिला। दोनों एक दूसरे को पाकर धन्य हो गए। गुरू विरजानन्द जी के पास भी न जाने कितने शिष्यों ने आकर शिक्षा ग्रहण की थी और स्वामी दयानन्द जी ने भी न जाने कितने गुरूओं का सान्निध्य प्राप्त किया था परन्तु इन दोनों के मिलन से संसार का जो उपकार हुआ वह अन्य किसी प्रकार से भी नहीं हो सकता था। गुरू विरजानन्द जी का जीवन बहुत ही तपस्या एवं नियमों के पालन से बद्ध था। वे हर काम समय के अनुसार करते थे। बचपन में ही आँखों की रोशनी चली जाने के बाद भी उन्होंने गायत्री की उपासना से अपने अन्दर के नेत्रों को खोल लिया था। भौतिक रूप से वे संसार को देखने में असमर्थ थे परन्तु अन्तर्चक्षु से संसार की दशा को देखते हुए दु:खी रहते थे। वे अपने राष्ट्र को स्वाधीन देखना चाहते थे। उनके लिए दासता एक अभिशाप थी। इस उद्देश्य के साथ वे निरन्तर अध्यापन का कार्य कर रहे थे कि शायद कोई ऐसा शिष्य मिले जो उनकी वेदना को समझ कर संसार के कल्याणार्थ कुछ कर सके। दूसरी ओर स्वामी दयानन्द जी ने सत्य और सच्चे शिव की खोज करने के लिए बालक मूलशंकर के रूप में घर का त्याग किया था। सच्चे शिव की तलाश में वे दर-दर भटक रहे थे। जंगलों में भटकते हुए अनेकों गुरूओं के सान्निध्य में रहते हुए योगाभ्यास करते हुए शुद्ध चैतन्य और स्वामी दयानन्द बनें परन्तु जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने घर का त्याग किया था उसमें पूर्ण रूप से तृप्ति नहीं हुई थी। जिस सच्चे शिव की उन्हें तलाश थी, जिस आत्मतत्व को वे जानना चाहते थे उससे अभी कोसों दूर थे। उनके अन्दर ज्ञान की जो अग्नि प्रज्वलित हुई थी वह अभी पूर्ण रूप से शान्त नहीं हुई थी। वे एक ऐसे गुरू की तलाश में थे जो उनकी सभी शंकाओं का समाधान कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे जंगलों में गए, हिमालय पर्वत पर गए परन्तु उनका आशय पूरा नहीं हुआ। किसी से प्रेरणा मिलने पर जब उन्हें दण्डी गुरू विरजानन्द जी के बारे में पता चला तो वे मथुरा के लिए चल पड़े। गुरू विरजानन्द की कुटिया पर पहुंच कर जब अन्दर से आवाज आई कि कौन? और तब बाहर से जबाव मिला कि यही तो जानने आया हूं। यह उत्तर सुनकर गुरू विरजानन्द ने द्वार खोलकर दयानन्द को अन्दर बुला लिया। मानो गुरू विरजानन्द को दयानन्द के रूप में उनके दोनों नेत्र मिल गए हों। जब गुरू ने पूछा कि दयानन्द क्या-क्या पढ़े हो और कौन-कौन से ग्रन्थ तुम्हारे पास हैं। दयानन्द ने जब उनके नाम गिनाए तो गुरू विरजानन्द ने कहा कि दयानन्द अगर मेरे पास विद्या ग्रहण करना चाहते हो तो पहले इन ग्रन्थों को यमुना में बहा आओ और इन्हें भूल जाओ। दयानन्द ने एक आदर्श शिष्य की भांति गुरू की आज्ञा का पालन किया और उन ग्रन्थों को यमुना में बहा दिया। यही से विलक्षण गुरू और विलक्षण शिष्य की जीवन यात्रा का आरम्भ हुआ। गुरू के पास ज्ञान के रूप में जो भण्ड़ार था सब दयानन्द ने अपने हृदय में अंकित कर लिया। गुरू विरजानन्द के सान्निध्य में रहकर स्वामी दयानन्द ने अपनी सभी शंकाओं का समाधान किया। गुरू ने दयानन्द को आर्ष गन्थों का अध्ययन कराकर उनके अन्दर के सभी संशयों को समाप्त कर दिया।

गुरू विरजानन्द के पास शिक्षा ग्रहण करते हुए स्वामी दयानन्द जी ने गुरू के सभी आदेशों को नतमस्तक होकर स्वीकार करते हुए उनकी ताड़ना को भी विनम्रता से स्वीकार किया। वर्तमान समय में जहां गुरू शिष्य का भावनात्मक सम्बन्ध टूट गया है वही पर प्राचीन समय गुरू शिष्य एक ही डोर से बन्धे होते थे। गुरू और शिष्य के बीच तनाव का कारण यही है कि आज नैतिक मूल्य समाप्त हो गए हैं। इसी कारण गुरू और शिष्य का सम्बन्ध कलंकित हो रहा है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि माता, पिता और गुरू मिलकर सन्तान का निर्माण करें। गुरू को माता-पिता के समान उच्च स्थान दिया गया है। गुरू का उद्देश्य शिष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना और शिष्य का उद्देश्य गुरू की आज्ञा का पालन करना होना चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने जब गुरू विरजानन्द के पास अपनी शिक्षा पूर्ण की तो उनके सामने प्रश्न उपस्थित हुआ कि गुरू को कौन सी वस्तु भेंट की जाए, क्योंकि उनके पास अपना तो कुछ था नहीं, जिसे वे भेंट में दे सकें। अपने गुरू की प्रिय वस्तु लौंग जानकर उन्होंने कहीं से माँगकर थोड़े से लौंग ले लिए और गुरू के चरणों में गुरूदक्षिणा भेंट करने के लिए उपस्थित हो गए। अपनी बारी आने पर दयानन्द ने जब लौंग उपस्थित किए तो गुरू ने कहा, दयानन्द क्या लाए हो? दयानन्द ने उत्तर दिया, गुरूदेव आपकी प्रिय वस्तु लौंग लाया हूं। गुरू ने गम्भीर भाव से कहा-दयानन्द मैं आपसे कुछ और ही चाहता हूं। दयानन्द के चेहरे के भाव बदल गए कि गुरूजी मुझसे क्या चाहते हैं? मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। गुरू जी पता नहीं कौन सी चीज माँग लेंगे। इस प्रकार का आन्दोलन उनके मन में चल रहा था परन्तु फिर भी नतमस्तक होकर कहते हैं कि गुरूजी आप आदेश दीजिए मैं उसे पूर्ण करने का प्रयास करूंगा। गुरू विरजानन्द ने कहा कि दयानन्द आज संसार से सत्य वेद विद्या का लोप हो गया है। लोग सत्य के मार्ग को भूलकर अज्ञान और अन्धकार में फंसे हुए हैं। ईश्वर के सच्चे स्वरूप को भूलकर लोग पत्थरों को भगवान मान बैठे हैं। दयानन्द मैं चाहता हूं कि तुम संसार को सत्य मार्ग दिखाओ। अवैदिक मतों का खण्ड़न कर सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करो। जो लोग अविद्या में फंसे हुए हैं उन्हें सही रास्ता दिखाओ। दयानन्द वेद विद्या का पुनर्रूद्धार करो, यही मैं आपसे गुरू दक्षिणा चाहता हूं। स्वामी दयानन्द ने नतमस्तक होकर गुरू के आदेश को स्वीकार किया। एक ऐसा गुरू जो नेत्रहीन होने पर भी अपने लिए कुछ नहीं माँगता है और सारे संसार का कल्याण चाहता है। संसार को अज्ञान रूपी अन्धकार से मुक्त देखना चाहता है और एक ऐसा शिष्य जो अपने गुरू की आज्ञा का पालन करने के लिए अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर देता है। गुरू पूर्णिमा का पर्व हमें ऐसे गुरू शिष्य के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश देता है।

आर्य बन्धुओं! प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी 27 जुलाई को गुरू पूर्णिमा का पर्व आ रहा है। इस पर्व पर हम अपनी प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का अवलोकन करते हुए सच्चे गुरू और सच्चे शिष्य के महत्त्व को समझने का प्रयास करें। गुरू के नाम पर आज जो गुरूडमवाद, पाखण्ड़ समाज में फैला हुआ है उससे समाज को बचाने का प्रयास करें। लोगों को बताएं कि सच्चे गुरू का जीवन कैसा होता है। इस पवित्र भावना के साथ अगर हम गुरू पूर्णिमा का पर्व मनाएंगे तो समाज निश्चित रूप से अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होगा तथा पाखण्ड़ और अन्धविश्वास समाप्त हो जाएगा।

-प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

वैदिक चिकित्सा विज्ञान

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की मान्यता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सब सत्य विद्याओं में नि:सन्देह चिकित्सा विज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। चिकित्सा विज्ञान मनुष्यों को स्वस्थ रख कर अपनी आयु बढ़ाने के साथ-साथ अस्वस्थ होने पर उसे औषध द्वारा पुन: स्वस्थ करके जीवन जीने का अवसर प्रदान करता है। यही कारण है कि समाज में चिकित्सक का स्थान बड़ा सम्माननीय माना जाता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में इसीलिए चिकित्सा विज्ञान पर गहन चिन्तन हुआ। तीनों वेदों में इस विषय पर एक हजार से भी अधिक मंत्र उपलब्ध हैं।

इस लेख में हम इन तीनों वेदों के आधार पर ही चिकित्सा विज्ञान पर विचार कर रहे हैं। चिकित्सा विज्ञान पर चर्चा करने से पूर्व शरीर रचना और उसकी कार्य प्रणाली को जान लेना अत्यन्त आवश्यक है। इसके पश्चात् ही रोग के कारण, लक्षण, निदान आदि पर विचार कर चिकित्सा प्रारम्भ करते हैं। अब हम इनमें से प्रत्येक बिन्दु पर अलग-अलग विचार करते हैं।

(1) शरीर रचना और उसकी कार्य प्रणाली-ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में शरीर रचना और उसकी कार्य प्रणाली पर कई सूक्तों में विचार हुआ है। यहाँ हम संक्षेप इस विषय पर विचार कर रहे हैं।

वेद में वर्णन है-किसके द्वारा मनुष्य की दोनों एड़िया पुष्ट की गई, किसके द्वारा मांस जोड़ा गया, किसके द्वारा दोनों टखने, सुन्दर अवयवों वाली अंगुलियां, इन्द्रियां, दोनों पांव के तलवे जोड़े गए। किसके द्वारा भूगोल के बीच पांव रखे गए।

फिर किस पदार्थ से मनुष्य के नीचे के दोनों टखने और ऊपर के दोनों घुटने ईश्वरीय गुणों ने बनाए हैं। दोनों टांगों को अलग-अलग करके किसके भीतर दोनों घुटनों के जोड़ों को उन्होंने जमाया है। इसे कौन जानता है।

कर्ता परमेश्वर ने इस मनुष्य के दोनों भुजाओं को यथावत् पुष्ट किया है कि वह उनसे वीर कर्म करता रहे। परमेश्वर ने इसके दोनों कन्धों को धड़ में यथावत् धारण कर दिया है।

दोनों हाथों, शिर, मुख, जीभ, गले की नाड़ियां और हंसली की हड्डियां इन सबको खाल से ढक कर जोड़ने वाली बड़ी शक्ति परमेश्वर ने मिला दिया है।

आगे विषय को विस्तार देकर कहा गया है-

कर्ता परमेश्वर ने मस्तक में सात गोलक खोदे। दोनों कान, दोनों नथुने, दोनों आंखें और एक मुख। जिनके विजय की महिमा में चौपाई और दोपाए जीव अनेक प्रकार से मार्ग में चलते हैं।

वेद में बताया गया है कि पुरूष का लिंग स्त्री के संयोग से वीर्य को छोड़ता और इसके अलग मूत्र छोड़ता है अर्थात् शरीर में मूत्र के स्थान से अलग स्थान में वीर्य रहता है और यह वीर्य सब अंगों से उत्पन्न होता है इसलिए उसमें सब अंगों की आकृति रहती है। इसी कारण जिसके शरीर से वीर्य उत्पन्न होता है उसी की आकृति वाला सन्तान उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार कई मंत्रों द्वारा शरीर की रचना बताई गई है। हम इसे यहीं छोड़ कर शरीर की कार्य प्रणाली पर विचार करते हैं।

तू ही मस्तिष्क से आदेश, प्रेरणा आदि का आकर्षण करने वाली और शारीरिक अनुभूति को लेकर मस्तिष्क में आरोहण करने वाली कुटिलगामिनी वातनाड़ियों में उष्ण तरल पदार्थ को धारण करता है।

अनन्तर जब सभी दिव्य अंग सर्पवत् कुटिल भावनाओं को प्रचण्डताओं को लांघ जाते हैं तब तू उनको शिकार करने पशुओं के बराबर का बल उन्हें प्रदान करता है। इसका अर्थ यह है कि मस्तिष्क वातनाड़ियों के आधार पर काम करता है और सभी अंगों को इतना बल देता है कि कुटिल भावनाएं उनको पीड़ित नहीं कर सके। मस्तिष्क ही चेतना का केन्द्र होता है।

इसलिए मनुष्य को मस्तिष्क की शक्ति को बढ़ाते रहना चाहिए।

वेद में वर्णन है-हे अनेक नामों से प्रसिद्ध। बहुतों से स्तुत मेरी मनन शक्ति। इस रीति से ज्ञान चाहने वाली कर्तृत्व बुद्धि के साथ प्रत्येक ऐश्वर्य के इच्छुक जन में अपने अस्तित्व को व्यक्त कर।

इस विषय को अब यही विराम देकर आगे बढ़ते हैं।

2. रोग उत्पन्न होने के कारण-रोग उत्पन्न होने के कारण अनियमित जीवन, दूषित खाद्य और पेय पदार्थों का उपयोग तथा रोगाणुओं का किसी भी माध्यम से शरीर में प्रवेश कर जाना ही होता है।

वेद का कथन है-हे आह्लादप्रद, हे सर्वश्रेष्ठ रस तथा शरीर पोषक अन्न। तू हम जीवों से पीत और भुक्त होकर, हमारे हृदय के लिए कल्याणकारी हो, जैसे पुत्र के लिए पिता सुख दाता होता है अथवा मित्र मित्र को दुर्गुणों से दूर हटा कर हित कार्य में लगा देता है। हे सोम। तू धीर होकर जीवन के लिए हमारी आयु को बढ़ा दें।

यह भी वर्णन है कि-व्यक्ति भूख लगने पर ही भोजन करे तथा भूख से कुछ कम ही भोजन करे, अधिक भोजन करना शरीर को हानि पहुंचाता है। उत्तम भोजन और स्वच्छ निवास स्थान रोग नाशक होते हैं।

वे अनिवार्य रोग हमारे शरीर से दूर हो जायें। यद्यपि ये अत्यन्त बलवान् हैं तथापि अब उनकी शक्ति न्यून हो गई है, वे दुर्बल हो गये हैं क्योंकि हमें उत्तमोत्तम रस और भोजन प्राप्त है और हम लोग वहां बसे हैं जहां रहने से आयु बढ़ती है।

रोगों की उत्पत्ति का दूसरा मुख्य कारण रोगाणुओं का शरीर में प्रवेश कर जाना है। रोगाणु वायु जल द्वारा ही नहीं वरन् अपने बिस्तर और तकिए द्वारा भी शरीर में प्रवेश कर हमें रोगी बना देते हैं। अत: इनकी स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए।

वेद में वर्णन है-हमारे उपधानों में भरे हुए जन्तुओं को मैं बड़ी चोट से मारता हूँ। पक्के और कच्चे कीटाणु निर्बल हो गए हैं। बचे हुए दुष्टों को नीचे डालकर मैं मार डालूं जिससे कोई कीट बचा न रहे।

मलेरिया आदि कुछ रोग मच्छरों द्वारा भी फैलते है। इस विषय में वेद में कहा गया गया है-मच्छर का घर मूंज आदि घास वाले पर्वत हैं और इसका घर महावृष्टि वाले प्रदेश हैं।

3. औषध-विज्ञान-वेद का कथन है कि औषधियों के प्रयोग से मनुष्य अपने को रोगों से ही मुक्त नहीं करता है वरन् अपनी आयु में वृद्धि भी कर लेता है। कहा गया है-हे औषधि को जानने वाले पुरूष। तेरी औषधि का सेवन करने वाला मैं जिस प्रयोजन के लिए और जिस पुरूष के लिए औषधि को खोदूं उससे वह अधिक आयु वाला होवे और बड़ी आयु वाला होकर जो बहुत अंकुरों से युक्त औषधि है उसको सेवन करके सुखी और प्रसिद्ध हो।

वेद का यह भी कथन है कि संसार में जितने रोग हैं उतना ही उनका नाश करने वाली औषधियां भी हैं। गुदेन्द्रिय की व्याधि, मुख के रोग तथा राज रोगों को हटाने वाली औषधियां भी हैं उन्हें जानो।

वैद्य गण रोगी में पहले रोग के लक्षण देखते है। फिर कौन सा रोग है यह निर्णय करते हैं और फिर निदान करते हैं। वेद में वर्णन है-

हे मनुष्य लोगों। जो सर्वोत्तम सोमलता के साथ वर्तमान औषधी है उसके गुणों के विषय में आप विद्वान् लोग संवाद करो। वेदों और उपवेदों का वेत्ता पुरूष जिस रोगी के लिए इन औषधियों का ग्रहण करता है उस रोगी को इन औषधियों के द्वारा रोग से मुक्त कर देता है।

औषधि के प्रयोग से रोग दूर भाग जाते हैं, इस पर कहा गया है-

'हे मनुष्यों! तुम लोग सब ओर से स्थित सोमलता और जौ आदि औषधी का उपयोग करो। इससे रोग ऐसे भाग जावेगा जैसे गौशाला में दीवार तोड़ कर घुसा चोर मालिक के धमकाने से भाग जाता है। औषधियां शरीर के अन्दर पापों के फल के समान जो रोग हैं उन्हें हटा देती हैं।

वेदों में नितत्नी, पिप्पली, कुष्ठ, शतवार, पाठा, जड़ गिड़ आदि कुछ औषधियों के गुणों का वर्णन भी हुआ है।

जैसे पिप्पली पागलपन की

(शेष पृष्ठ 6 पर)

प्रजा कल्याण ही राजा का धर्म

डॉ.-अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

वेद में विभिन्न स्थानों पर राजा की प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में कुल का वर्णन किया गया है तथा कहा गया है कि यदि राजा सुख व शान्ति चाहता है तो अपनी प्रजा की सुख शान्ति का सदा ध्यान रखे। इस में ही राजा की प्रतिष्ठा बढ़ती है राजा की इच्छा तो सदा प्रशस्ति पाने की होती है, प्रतिष्ठा पाने की होती है। राजा को यह प्रतिष्ठा तब ही प्राप्त होती है, जब वह अपनी प्रजा की प्रतिष्ठा स्थापित करता है। इस सम्बन्ध में वेद के स्पष्ट आदेश का एक उदाहरण देखें :

विशी राजा प्रतिष्ठितः।। यजुर्वेद २०.८।।

यजुर्वेद का यह मन्त्र स्पष्ट बता रहा है कि राजा तब तक ही अत्यंत प्रतिष्ठा के साथ अपने पद पर रह सकता है, जब तक प्रजा उस पर विश्वास करती है। ज्यों ही प्रजा का विश्वास राजा से उठ जाता है त्यों ही प्रजा उसे धूली चटवा देती है, पद से हटा देती है।

मन्त्र स्पष्ट उद्घोष कर रहा है कि राजा अपने पद पर आसीन होने के साथ ही जनहितकारी कार्यों में लिप्त हो जावे। प्रजा को विद्वान्, बुद्धिमान बनाने के लिए, उसमें ज्ञान की खेती करने के लिए गुरुकुल, विद्यालय तथा महाविद्यालय स्थापित करे, विश्वविद्यालय स्थापित करे ताकि प्रजा अधिक से अधिक ज्ञान की स्वामी बन सके। यह राजा का कर्त्तव्य होता है कि वह अपने राज्य में उत्तम कृषि की व्यवस्था करे। इसके लिए सिंचाई के साधन, उत्तम बीज तथा अच्छी कृषि के साधनों को पैदा करे तथा इन साधनों की उपलब्धता किसानों के लिए करावे ताकि वह इनके प्रयोग से उत्तम अनाज व अन्य सामग्री पैदा कर राज्य के भंडारण को समृद्ध करने में अपना योगदान कर सकें।

राजा के लिए यह भी आवश्यक है कि कृषि के कारण उत्पन्न हुए इन पदार्थों का वितरण करने के लिए व्यापार की उत्तम व्यवस्था करे। इससे बहुत से लोगों को व्यवसाय तो मिलेगा ही, इसके साथ ही अनाज, वस्त्र, जूते व अन्य सामग्री को प्रजा सुगमता से प्राप्त करेगी। इसके लिए राजा को समय समय पर विदेशों से भी सम्बन्ध बना कर अपने राज्य के अभाव को दूर करने के लिए स्वदेशों से भी सामग्री खरीदने का उपाय करना चाहिए। इससे देश के सब प्रकार के अभाव दूर होते हैं तथा विदेशों से भी सम्बन्ध मजबूत होते हैं।

सेना राजा की व्यवस्था के लिए उत्तम साधन होती है तथा यह ही राजा की शक्ति को बढ़ाने का साधन होती है। जो शक्ति प्रजा ने राजा को दी है, उस शक्ति का विस्तार सेना ही कराती है। इसलिए राजा को अपनी सेना को आधुनिक शस्त्रों से युक्त कर उसे संगठित व उत्तम बनाना आवश्यक होता है ताकि वह अपनी प्रजा को न केवल आतंरिक विद्रोहों से बचा सके बल्कि विदेशी आक्रमणों से भी प्रजा की रक्षा कर सके और यदि कोई शत्रु बहुत अधिक परेशानी का कारण हो तो उस पर आक्रमण करके भी अपने राज्य में शान्ति की व्यवस्था का सदा प्रयास करे।

हम जानते हैं कि राजा की स्थिति प्रजा की दया पर ही निर्भर करती है तथा वह तब तक ही अपने पद पर आसीन रह सकता है।

जब तक प्रजा की दया उसके साथ है। ज्यों ही प्रजा की दया, प्रजा का विश्वास डगमगाया त्यों ही प्रजा अपने राजा को उसके राज्याधिकार से च्युत कर सकती है। प्रजा ही राजा की मालिक होती है, प्रजा ही राजा को उत्पन्न करने वाली माता होती है, प्रजा ही राजा का शासक के रूप में पालन करने वाली पिता होती है, प्रजा ही अपने मताधिकार रूपी दंड से दण्डित करने वाली गुरु होती है। इसलिए प्रजा को प्रसन्न रखना राजा का प्रथम और आवश्यक कर्तव्य होता है।

किन्तु जब राजा अहंकारी हो जाता है, राजा निरंकुश हो जाता है, स्वयं को प्रजा से ऊपर समझाने लगता है तो वह प्रजा को अपना नौकर मान बैठता है तथा अपने सुखों को बढ़ाने के लिए प्रजा के सुखों की कुछ भी चिंता नहीं करता। अत्याचार ही उसका शास्त्र बन जाता है। इस प्रकार के राजा को अवसर मिलते ही प्रजा धूली धूसरित कर देती है।

इसका साक्षात उदाहरण है हमारे देश की विगत सरकार। इसी सरकार ने अपने प्रायः सब मंत्री इस प्रकार के बना रखे थे, जो कानूनविद थे। वह प्रत्येक कार्य को कानून की दृष्टि से देखते थे तथा कानून को भी तोड़ मरोड़ कर अपने अनुकूल बना लेते हैं। इस कारण प्रजा के अन्दर विरोध की दबी भावना पैदा होने लगी। प्रजा का जन्मसिद्ध अधिकार है राजा के गलत कार्यों के विरुद्ध आवाज उठाना किन्तु वह यह अधिकार भी देना नहीं चाहते थे। वह कहते थे कि हम प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि है इसलिए हमारे विरोध का अधिकार किसी के पास नहीं है। किसी को धरना प्रदर्शन का अधिकार नहीं है। जिसने धरना, प्रदर्शन या भूख हड़ताल की उसे हम देश द्रोही मानेंगे और हम ने देखा कि इस प्रकार की प्रजा को प्रताड़ित किया गया, उस पर लाठियां बरसाई गई। जेल में डाला गया, उन्हें अपमानित किया गया किन्तु जनता तो जनता ही होती है। समय आया जनता को अपना मताधिकार प्रयोग करने का अवसर मिला तो उसने उस सरकार को बता दिया कि अत्याचारी जनसेवक को जनता राज्य से च्युत करने की शक्ति रखती है ओर उसे सता से दूर कर दिया गया। इतना दूर कर दिया गया कि वह आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। परदे से एक प्रकार से पूरी तरह ओझल हो चुके हैं।

इसलिए मन्त्र कह रहा है कि जो राजा अपनी प्रजा को प्रसन्न रखता है, जो अपनी प्रजा को खुश रखता है, जो अपनी प्रजा की आवश्यकताएँ पूर्ण कर उसे संतुष्ट रखता है तथा जो राजा अपनी प्रजा ऐसी सब प्रकार की उन्नति करने का मार्ग प्रशस्त करता है, इस प्रकार का राजा राजा कहलाने का सच्चा अधिकार है।

ऐसी किसी राजा को राजन्य की श्रेणी में नहीं लाया जा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि आज के राजा, आज के शासक वेद को समझें, वेद की शरण में जावें, अपनी सब प्रकार की समस्याओं का समाधान वेद में खोजें तथा उसके अनुरूप ही सब व्यवस्था करें तो निश्चित है कि वह अपनी प्रजा में ही नहीं ऐसी राजाओं की सभा में भी प्रतिष्ठा को प्राप्त करने में सफल होंगे। बस वेद के आदेश का पालन आवश्यक है। जब तक नहीं मानेंगे तब तक कल्याण संभव ही नहीं।

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यवौरस्तु नः पिता।।

-ऋ० १.९०.७

भावार्थ-हे जगत्पिता परमात्मन्! हमारे लिए, सब रात्रि और प्रातः काल मधुवत् सुखदायक हों। सब नगर ग्राम गृहादि भी सुखजनक हों। यह ऊपर का द्युलोक, जो बरसात द्वारा हम सबका पालक होने से पिता रूप है वह भी सुख देने वाला हो।

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।।

-ऋ० ५.५१.१२

भावार्थ-हे अनन्त बलवान् परमैश्वर्ययुक्त, सत्कर्मों में प्रेरक ब्रह्माण्डों के और वेदवाणी के रक्षक, सब की गिनती करने वाले सर्वशक्तिमान् जगत्पिता परमात्मन्! आपकी हम जिज्ञासु लोग, बारम्बार स्तुति और प्रार्थना करते हैं, कृपा करके हमारा इस लोक और परलोक में सदा कल्याण करें। भगवान्! आपके भक्त जो वेदविद्या के ज्ञाता और सबका कल्याण चाहने वाले शान्तात्मा महात्मा हैं, वे भी हमें ब्रह्मविद्या का उपदेश देकर, हमारा कल्याण करने वाले हों।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता सं गमेमहि।।

-ऋ० ५.५१.१५

भावार्थ-हे परमातमन्! हम पर कृपा करके प्रेरणा करो कि हम लोग कल्याणप्रद मार्ग पर चलें। जैसे सूर्य और चन्द्रमा प्रकाश और सबका पालन पोषण करते हुए जगत् का उपकार कर रहे हैं, ऐसे हम भी अज्ञानान्धकार का नाश करते हुए, जगत् के उपकार करने में लग जायें। भगवन्! आप महादानी सबके रक्षक महाज्ञानी हों, ऐसे आपसे हमारा पूर्ण प्रेम हो और आपके प्यारे जो महापुरुष, सन्तजन हैं जो परम उदार, किसी प्राणी की भी हिंसा न करने वाले, वेद शास्त्र उपनिषदों के ज्ञाता विद्वान् ब्रह्मज्ञानी और आपके सच्चे प्रेमी हैं उन महानुभाव महात्माओं का हमें सत्संग दो, जिससे हम, आपके ज्ञानी और सच्चे प्रेमी भक्त बन कर, अपने जन्म को सफल करें।

पृष्ठ 4 का शेष-वैदिक चिकित्सा...

औषधि है, बड़े घावों की भी औषधि है। विद्वानों ने स्वीकार किया है कि वह जीवन दात्री है।

इसी प्रकार-हे नितत्नी। पुराने केशों को दृढ़कर, बिना उत्पन्न हुए केशों को उत्पन्न कर और उत्पन्न हुओं को बहुत लम्बा बना दे।

इस प्रकार पाठा औषधि के विषय में कहा गया है-'इस पाठा औषध के सेवन से मैं स्त्री उत्कृष्टतरा तथा उत्कृष्टतरा स्त्रियों से अधिक उत्कृष्ट होऊँ और जो मेरी सौत है वह निष्कृष्टों से भी नित्कृष्ट हो जावे।

इसी प्रकार जङ्गिड औषध के विषय में कहा गया है, 'हे वनस्पति। तुझ को उस इन्द्र ने ही बल और सब ओर से शक्ति दी है। हे औषधि। सब पीड़ाओं को नाश करता हुआ तू रोगाणुओं को मार दे।

फिर शतवार के विषय में कहा गया है-वह अपने दोनों सींगों से राक्षस (कीटाणु) और जड़ से दु:खदात्री पीड़ाओं को ढकेलता है। मध्य भाग से राज रोग को हटाता है। इसको कोई अनहित नहीं दबा सकता है।

इस विषय को अब यही विराम देकर आगे चलते हैं।

4. शल्य चिकित्सा-वेदों में शल्य चिकित्सा पर भी पर्याप्त विवरण प्राप्त है।

यहां हम संक्षेप में विचार कर रहे हैं। वेद में कहा गया है-'हे मनुष्य जो कुछ तेरा टूटा हुआ अंग और जलता हुआ तथा जो शरीर में पीसा हुआ है, मैं पोषण करने वाला वैद्य कल्याण करने वाली क्रिया से उस जोड़ को दूसरे जोड़ से फिर जोड़ दूंगा।'

विषय को विस्तार देकर कहा गया है-

'हे विद्वान्! तेरे हाड़ की मींग हाड़ की मींग से मिल जावे और तेरा जोड़ जोड़ से मिल जावे। तेरे मांस का हटा हुआ अंश जुड़ जावे और हाड़ भी जुड़ कर ठीक हो जावें।'

यदि कटारी आदि हथियार ने गिर कर काट दिया है अथवा फेंके हुए पत्थर से चोट लगी है तो बुद्धिमान पुरूष रथ के अंगों के समान एक जोड़ को दूसरे जोड़ से मिला देवे।

5. विष चिकित्सा-ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में विष चिकित्सा पर भी पर्याप्त विवरण उपलब्ध है। कुछ पक्षी भी विष को चूस लेते हैं कहा गया है-हे विष! शीघ्रगामी सुन्दर पंख वाले गरूड़ ने प्रसिद्ध तुझ को खाया, तूने उसे न तो मत्त किया और न व्याकुल किया किन्तु तू उसके लिए अन्न हुआ है।

विषय को विस्तार देते हुआ कहा है-बाण की नोक से, लेप से और पंख वाले तीर के भाग से विष को निकाल कर मैंने वचन बोला है। तीक्ष्ण बाण के फल से और बाण छिद्र से विष को निकाल कर मैंने वचन बोला है।

जो इक्कीस प्रकार की छोटी-छोटी चिड़ियां विष के पुष्ट होने के योग्य पुष्प को खाती हैं। इससे वह भी शीघ्र नहीं मरती हैं और हम लोग भी नहीं मारे जाते और उनके संयोग से विष का प्रभाव दूर हो जाता है। हे विषधारी। विष हरण करने में स्थिर विष करने वाले वैद्य तूने मधुरता को प्राप्त किया है। इसकी मधुरता ग्रहण कराने और विष हरने वाली विद्या है।

इसी प्रकार कपिञ्जला चिड़िया भी विष को दूर देती है।

जहरीले तीर से शरीर में विष प्रवेश कर जावे उसकी चिकित्सा भी होती है। वरूण नामक औषधि से भी विष का प्रभाव हटा दिया जाता है। 'उत्तम गुण वाली क्रिया में (वरूण नामक औषधि में) वर्तमान यह जल विष को हटावे। उस जल में अमृत का रस है। उस जल से विष को मैं हटाता हूँ।'

विषैले पक्षी, पशु, सर्प आदि के काटने पर क्या करें ? इस पर वेद कहता है-

हे मनुष्य। जो कुछ तेरा अंग काले पक्षी, चीउंठा, सर्प अथवा कुत्ते के समान पांव वाले जंगली पशु आदि ने घायल कर दिया है। उस अंग को सर्व रोग भक्षक आग नीरोग कर देवे और जिस ऐश्वर्य ने बड़े विद्वानों में प्रवेश किया है वह भी उसे निरोग करे।

6. वेदों में प्राकृतिक चिकित्सा का भी वर्णन किया है। प्राकृतिक चिकित्सा में सूर्य चिकित्सा, वायु चिकित्सा, जल चिकित्सा तथा मृदा द्वारा चिकित्सा करना सम्मिलित है।

सूर्य चिकित्सा-सूर्य की किरणें रोगाणुओं को नष्ट कर दिया करती है। कहा गया है-जो सूर्य प्रकाशमान और व्यापित वाले धारण और आकर्षण गुणों को पुष्टि के लिए अधिकार में रखता है वह द्यू और पृथ्वी लोक के द्वारा हनुवाला होकर कृमि आदि का नाश करता है।

इसी प्रकार वायु के विषय में कहा गया है कि वायु ओषध है जो हमारे हृदय के लिए कल्याण कारक है, आनन्दायक है और हमारी आयु को बढ़ाने वाला है।

हे वायु! स्वास्थ्य को बहाकर ला और हे वायु। जो दोष है उसे बहाकर निकाल दे हे सर्व रोग नाशक वायु! तू इन्द्रियों, विद्वानों और सूर्यादि लोकों के बीच चलने वाला वा दूत होकर फिरता रहता है।

इसी प्रकार जल के लिए कहा गया है-जल निश्चय ही भेषज रूप है। जल रोग को दूर करने वाला है। जल सभी प्राणियों के लिए भेषजभूत है। अत: वे तुझ रोगी की चिकित्सा करें।

इसी प्रकार मृदा का उपयोग भी ज्वर की तीव्रता कम करने में होता है। इसके अतिरिक्त स्त्री रोगों के विषय में ऋग्वेद और यजुर्वेद में 50 से भी अधिक मंत्र उपलब्ध हैं।

आयुर्वेद में नपुंसक पुरूष और बांझ स्त्री की चिकित्सा का भी वर्णन है। वेद में वर्णन है-नपुंसक पुरूष को उपयोगी बना और कर्मचारी बना। बड़े ऐश्वर्य वाले वैद्य आप पत्थर समान दो दृढ़ शस्त्रों से इस रोगी के दोनों आंडी को छेदें।

इस प्रकार बांझ स्त्री के बांझपन को दूर करने के विषय में वर्णन है।

'हे स्त्री। जिस कारण से तू बांझ हुई है, उस कारण को तुझसे मैं नष्ट करा देता हूँ। उसे दूर हटाकर हम कहीं दूर रख देते हैं।

अथर्ववेद में टीकाकरण का भी वर्णन है। उस पर स्थानाभाव से नहीं लिख रहे हैं।

7. कीटाणुनाशन-रोगाणु हमारे बिस्तर एवं वस्त्रों में प्रवेश न कर पावें इसलिए उन्हें सदैव स्वच्छ रखना चाहिए और यदि किसी प्रकार से रोगाणु हमारे शरीर में प्रवेश कर जावें तो उन्हें भी तुरन्त नष्ट कर देना चाहिए।

उदय होता हुआ प्रकाशमान सूर्य उन कीटाणुओं को मार डाले और अस्त होता हुआ सूर्य भी अपनी किरणों से उन्हें मारे जो कीड़े पृथ्वी के अन्दर हैं।

8. कृत्रिम अंगों का प्रत्यारोपण-ऋग्वेद में धातु की जङ्घाप्रत्यारोपण का भी वर्णन हुआ है। युद्ध में अथवा खेलने में वा बीमारी में चलने फिरने का साधन (पैर) निश्चय ही टूट गया है। हे चिकित्सकों! तत्काल भागने या भगाने के लिए युद्ध या धन के लिए हित साधन के कार्य में चलने के लिए लोहे की बनी जड़ घा फिर से लगा दें।

इसी प्रकार यदि किसी कारण से मूत्र का बहना रूक जावे तो सरकण्डे का प्रयोग कर उसे ठीक कर देवे। इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद में चिकित्सा विज्ञान का विस्तृत वर्णन है। इति।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

पृष्ठ 2 का शेष-बेटी नहीं होगी तो सृष्टि...

? Any country that accepts aboration if not teaching its people to love but to use any wiolance to get what they want."

यदि हम यह स्वीकार कर लें कि एक माँ अपने बच्चे की हत्या कर सकती है तो हम दूसरों से कैसे कह सकते हैं कि वे एक दूसरे की हत्या न करें। जो भी देश गर्भपात को मान्यता देता है वह अपनी प्रजा को प्रेम की शिक्षा न देकर अपनी इच्छापूर्ति के लिए हिंसा अपनाने की शिक्षा ही दे रहा हैं।

एक जगह उन्होंने कहा कि गर्भपात आज विश्व-शान्ति को नष्ट करने का सबसे बड़ा कारण है। जिसने जीवन दिया है। केवल एक उसी प्रभु को जीवन लेने का अधिकार है। उसके अतिरिक्त किसी को भी चाहे वह माँ हो, बाप हो, डॉक्टर हो, कोई संस्था या सम्मेलन हो, चाहे कोई सरकार हो, गर्भपात द्वारा जीवन लेने का कोई अधिकार नहीं हैं लेकिन आज समाज में कैसा खुल्लम-खुल्ला घोर अन्याय हो रहा है। आज भी राजस्थान में कई ऐसे सुदूर गाँव हैं, जहाँ आज तक कोई बारात आई ही नहीं। समाज की संवेदना आज खत्म होती जा रही है और उसका भविष्य अंधकारमय लग रहा है। हिन्दू समाज को अपने इस रोग को स्वीकार करना चाहिए। अल्ट्रा, सोनोग्राफी द्वारा जन्म से पूर्व लिंग का पता लगाकर कन्याओं की भ्रूण हत्याओं के कारण देश में पुरूष और स्त्री का संतुलन बिगड़ गया है। बांग्लादेश, नाइजीरिया और ब्राजील जैसे अविकसित देशों में लिंग असंतुलन का अनुपात भारत की तुलना में बहुत कम है। इसका कारण धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का मरण है।

परन्तु प्रश्न है कि इस दोष की जड़ समाप्त कैसे हो ? कन्या भ्रूण हत्या करने वाले कानून की पकड़ में कैसे आएँ ? 1999 में लागू भ्रूण हत्या, कन्या हत्या विरोधी अधिनियम के अंतर्गत कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती है, तो कौन किस पर कार्यवाही करे लिंग परीक्षण कराने व करने वालों की मिली भगत है। प्रमाण के अभाव के कोई दूसरा कानून की शरण में जा नहीं सकता। जनसंख्या नियंत्रण के लिए अरबों रूपये बहाये जा रहे हैं। अनेक प्रकार के उपाय खोजे जा रहे हैं परन्तु दुर्भाग्य देखिए कि भारतीय जीवन और आयुर्वेद का हजारों वर्ष से प्रतिष्ठित सिद्धान्त ब्रह्मचर्य जिसे सम्पूर्ण भारतीय समाज ने हजारों हजार वर्षों तक स्वीकार किया, सुयोग्य संतानों और चिरस्थायी दाम्पत्य जीवन के लिए उचित माना गया, योग की विभूतियों की प्राप्ति दीर्घायु और आरोग्य के लिए एक स्वर में आवश्यक माना गया लेकिन ब्रह्मचर्य को भोगवादी पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति ने व्यर्थ बताया। इसीलिए आज यौन भोग को छूट भी दी जाती है और जनसंख्या नियंत्रण की बात भी की जाती है। इस द्वन्द में कमाई करने के लिए जनसंख्या नियंत्रण उपायों के उद्योग खड़े किये गए हैं। युवा पीढ़ियों को पतन की ओर प्रवृत्ति करने वाले साजोसामान पर कोई नियंत्रण नहीं है।

इस विस्तृत उद्यम में बड़े-बड़े देशी-विदेशी धन्ना सेठों की कम्पनियां लगी हुई हैं। भौतिकता फैलाने वाले समूह इनके खिलाफ आवाज़ उठाने वालों के पीछे पड़ जाते हैं। ऐसी दशा में गर्भपात को वैधानिकता न देने वाली किसी व्यवस्था के अधिनियम का सिर्फ कन्या भ्रूण की हत्या की रोकथाम तक सीमित रहना अत्याव्यावहारिक हो सकता है। उच्चतम न्यायलय का निर्देश और सरकारी समिति के गठन से और आगे सृष्टि गर्भ की रक्षा का अभियान में हमारे समाज को खड़ा होना होगा।

यह विषय धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पुनर्रचना से जुड़ा है। यदि इस समस्या को केवल कानून व्यवस्था से नियंत्रित करने का बाहरी प्रयास किया गया तो सफलता नहीं मिलेगी। सामाजिकता को बदल देने वाली मानसिकता जागृत करने की आवश्यकता है। मातृशक्ति के वर्चस्व को विश्व का मूलाधार सिद्ध करने की जरूरत है।

आज मातृशक्ति पर जिस तरह से कहर वर्षाया जा रहा है, उसको खत्म किया जा रहा है, बड़ी वेदना की बात है। पहले तो कन्या को जन्म के समय ही मारा जाता था लेकिन अब भ्रूण हत्या का पैशाचिक कर्म होने लगा। माताऐं ही अपनी बेटियों की हत्या करने लगीं। सर्वेक्षण से पता चला कि करोड़ों की संख्या में कन्याओं की भ्रूण हत्या कर दी गई। कन्याओं का इतने बड़े पैमाने पर संहार होना रोंगटे खड़े कर देता है। यदि इसी रफ्तार से कन्या भ्रूण हत्या का यह पैशाचिक षड़यंत्र जारी रहा तो अगले बीस-तीस सालों में लड़कों की तुलना में लड़कियों आधी से कम हो जायेगी और तब शुरू होगा नारी उत्पीड़न का वह दौर जिसमें वासना के विपासु लड़कियों की तस्करी करेंगे, अपहरण और बलात्कार कर बाजार गर्म होगा। जैसे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने पर भूकम्प और सुनामी का कहर बरपा करता है, उससे भी अधिक कहर बरपेगा परमात्मा के बनाये संतुलन को बिगाड़ने से। जो काम हिरोशिमा और नागासाकी पर गिरने वाला अणु बम नहीं कर सका, जो काम दुनियों भर के आतंकवादी भी मिल कर नहीं कर सकेंगे, वह काम भारत में डॉक्टर के वेश में दरिंदे और माता-पिता के नाम पर अपनी ही संतान के लोभी, लालची हत्यारे मिलकर कर डालेंगे। इस घोर पाप को होता देख कर आप और हम यदि चुप रहेंगे, इसे रोकने की ईमानदारी से कोशिश नहीं करेंगे, अपने दिलों में बची करूणा को और आँखों में बची आँसू की बूंदों को समेटकर इस सम्भावित नारकीय वेदना से मानवता को नहीं बचाऐंगे तो हमें भी धिक्कार है मनुष्य जन्म लेने का। हमें भी यह पाप लगेगा जो किसी के मिटाए नहीं मिटेगा, किसी के धोए नहीं धुलेगा।

अत: आर्यो! ऐसी स्थिति में जिम्मेदारी आप के ऊपर है। आर्य समाज ने ही तो नारी मुक्ति का आन्दोलन चलाया था ? वह 58 वर्ष तक चुपचाप बैठा रहा। अब नारी मुक्ति उसका मुद्दा नहीं रहा। आर्य समाज केवल अपनी चारदीवारी में संध्या-हवन तक सिमट कर रहा गया। समाज के साथ उसका कोई सरोकार नहीं रहा। आर्य समाज को इस ओर बढ़ना होगा। माताओं को इसमें अपनी भागीदारी निभानी होगी, एक सशक्त आन्दोलन खड़ा करना होगा। तभी मातृशक्ति का वास्तविक स्वरूप प्रकट होगा, अन्यथा हम स्वयं अपने अन्त को आमंत्रित करेंगे।

ईश्वर की उपासना भय से नहीं भाव से करनी चाहिए

ले०- पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकात्ता

गतांक से आगे

ऐसे व्यक्ति को मोक्ष मिलना निश्चित है इसके अलावा जो मनुष्य अपने जीवन में पच्चास प्रतिशत या इससे अधिक अच्छे कर्म करता है तो वह अच्छे कर्मों के अनुसार मनुष्य योनि में अच्छे या हल्के परिवार में जन्म लेता है। यानि पच्चास प्रतिशत वाला किसी अनपढ़ गरीब परिवार में जन्म लेगा। जो साठ प्रतिशत अच्छे कर्म करता है उसका और अच्छे परिवार में, इसी प्रकार सत्तर, अस्सी प्रतिशत अच्छे काम करने वाले का जन्म किसी अच्छे सादुकार परिवार में और नबे, बीचानवें प्रतिशत अच्छे काम करने वाले का जन्म किसी राजा व प्रधान मन्त्री के घर में होता है जिसमें उसको पूरी सुविधा होगी। इसी प्रकार जो व्यक्ति पच्चास प्रतिशत से कम अच्छे काम करता है उसको पथु योनि में, जो और अधिक कम अच्छे काम करता है और बुरे काम अधिक करता है। उसको कर्मानुसार नीचे की योनि पक्षी, कीट पतंग और गन्दी नाली के कीड़ों की योनि मिलती है और जो मनुष्य अपने जीवन भर परोपकार के कार्य करेगा। प्रात: व सायं ईश्वर की नित्य उपासना करेगा और अष्टांग योग करके समाधि तक पहुँच जायेगा, उसको निश्चित ही मोक्ष प्राप्त होगा। वैसे तो कर्मों के फल का पूरा ज्ञान तो केवल ईस्वर को ही है। मनुष्य तो केवल कल्पना ही कर सकता है। कल्पना के आधार पर सब को ऐसा ही मानना उचित है।

ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों जिनके नाम आग्री, वायु, आदित्य व अंगीरा था, उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्व वेद हैं उनका प्रकाश क्रमश: किया। इन वेदों में मनुष्य के जीवन में काम आने वाला साधारण ज्ञान से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक का ज्ञान ईश्वर ने दिया है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह इन चारों वेदों को पढ़े और उनके अनुसार चल कर अपने जीवन को उन्नत व समृद्धिशाली बनावे, साथ ही दूसरों को भी वेदों को पढ़ने की प्रेरणा देकर दूसरों के जीवन को भी सुखी बनावे जिससे वह स्वयं और दूसरे भी मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी बन सकें। इसीमें मानव की मानवता है। यही बात वैदिक धर्म सिखाता है इसलिये सब मनुष्यों को चाहिए कि अन्य मत-मतान्तरों को छोड़ कर वैदिक धर्म को ग्रहण करके अपने जीवन में परोपकार करते हुए, भाव से ईश्वर की उपासना करते हुए अष्टांग योग द्वारा समाधि तक पहुँच कर मृत्यु के बाद मोक्ष पाने के अधिकारी बने। यह निश्चित जाने कि केवल वैदिक धर्म ही मोक्ष-प्राप्ति का मार्ग सिखलाता है।

वेद से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

गतांक से आगे

प्र.1-सृष्टि के आरम्भ में ईश्वरीय ज्ञान का उद्‌भव कैसे हुआ?
उत्तर-वेदों से।
प्र.2-वेद क्या है?
उत्तर- विशेष ज्ञान।
प्र.3-वेद कितने हैं?
उत्तर-चार।
प्र.4-चारों वेदों के नाम क्या हैं?
उत्तर-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अथर्ववेद।
प्र.5-सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ?
उत्तर-आदि ऋषियों के द्वारा।
प्र.6-ऋग्वेद का ज्ञान किस ऋषि द्वारा प्राप्त हुआ?
उत्तर- अग्नि ऋषि द्वारा।
प्र.7-यजुर्वेद का ज्ञान किस ऋषि द्वारा प्राप्त हुआ?
उत्तर- वायु ऋषि द्वारा।
प्र.8-सामवेद का ज्ञान किस ऋषि द्वारा प्राप्त हुआ?
उत्तर- आदित्य ऋषि द्वारा।
प्र.9-अथर्ववेद का ज्ञान किस ऋषि द्वारा प्राप्त हुआ?
उत्तर-अंगिरा ऋषि द्वारा।
प्र.10-ऋषियों को वेदों का ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ?
उत्तर-समाधि अवस्था में।
प्र.11-वेदों में कैसा ज्ञान है?
उत्तर-पवित्र, वैज्ञानिक, तार्किक व सुख शान्ति तथा ज्ञान विकास का ज्ञान है।
प्र.12-ऋग्वेद में किस विषय का ज्ञान है?
उत्तर-ज्ञान विषय।
प्र.13- यजुर्वेद में किस विषय का ज्ञान है?
उत्तर-कर्म विषय का।
प्र.14-सामवेद में किस विषय का ज्ञान है?
उत्तर-उपासना व गायन विषय।
प्र.15-अथर्ववेद में किस विषय का ज्ञान है?
उत्तर-विज्ञान व कला विषय।
प्र.16-ऋग्वेद में कितने मण्डल हैं?
उत्तर-दस।
प्र.17-ऋग्वेद के मन्त्रों को क्या कहते हैं?
उत्तर-ऋचाएं।
प्र.18-ऋग्वेद में कितनी ऋचाएं हैं?
उत्तर-10552
प्र.19-यजुर्वेद के कितने अध्याय हैं?
उत्तर-चालीस।
प्र.20-यजुर्वेद में कितने मन्त्र हैं?
उत्तर-1976
प्र.21-सामवेद के कितने मन्त्र हैं?
उत्तर-1875
प्र.22-अथर्ववेद में कितने काण्ड हैं?
उत्तर-बीस काण्ड
प्र.23-अथर्ववेद में कितने मन्त्र हैं?
उत्तर-5977
प्र.24-चारों वेदों में कुल कितने मन्त्र हैं?
उत्तर-20380
प्र.25-वेदों को समझने के लिए सहायक ग्रन्थ कौन-कौन से हैं?
उत्तर-उपवेद, वेदांग, उपनिषद, स्मृतियां आदि।
प्र.26-उपवेद कितने हैं?
उत्तर-चार-
प्र.27-ऋग्वेद का उपवेद कौन है?
उत्तर-आयुर्वेद।
प्र.28-यजुर्वेद का उपवेद कौन है?
उत्तर-धनुर्वेद।
प्र.29-सामवेद का उपवेद कौन है?
उत्तर-गान्धर्व वेद।
प्र.30-अथर्ववेद का उपवेद कौन है?
उत्तर-अर्थवेद।
प्र.31-वेदांग कितने हैं?
उत्तर-छः हैं।
प्र.32-वेदांगों के नाम क्या हैं?
उत्तर-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, निरूक्त,ज्योतिष।
प्र.33-वेदांग के उपांग कितने हैं?
उत्तर-छः।
प्र.34-उपांगों के नाम क्या है?
उत्तर-न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त।
प्र.35-उपांगों का अन्य नाम क्या है?
उत्तर-दर्शन शास्त्र।
प्र.36-उपनिषद कितने हैं?
उत्तर-ग्यारह उपनिषद प्रमाणिक माने जाते हैं।
प्र.37-ग्यारह उपनिषदों के नाम क्या हैं?
उत्तर-ईशोपनिषद, कठोपनिषद, केनोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुण्डकोपनिषद, माण्डूक्योपनिषद, तैतिरियोपनिषद, ऐतरेयोपनिषद, छान्दोग्यापनिषद, बृहदारण्यकोपनिषद, श्वेताश्वेतरोपनिषद।
प्र.38-उपनिषदों की रचना किसने की
उत्तर-ऋषियों ने।
प्र.39-न्याय दर्शन की रचना किसने की थी?
उत्तर-गौतम मुनि ने।
प्र.40-वैशेषिक दर्शन की रचना किसने की थी?
उत्तर-कणाद मुनि।
प्र.41-सांख्य दर्शन के रचयिता कौन थे?
उत्तर-कपिल मुनि।
प्र.42-योगदर्शन के रचयिता कौन थे?
उत्तर-पतंजलि मुनि।
प्र.43-मीमांसा दर्शन के रचयिता कौन थे?
उत्तर-जैमिनी मुनि।
प्र.44-वेदांत दर्शन के प्रणेता कौन थे?
उत्तर-वेद व्यास मुनि।
प्र.45-ब्राह्मण ग्रन्थ किसे कहते हैं?
उत्तर-वेदों के भाष्य को समझने के लिए इन ग्रन्थों को आवश्यकता होती है।
प्र.46-वेदों का भाष्य समझने के लिए मुख्य ब्राह्मण ग्रन्थ कितने हैं?
उत्तर-चार।
प्र.47-ऋग्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ कौन सा है?
उत्तर-ऐतरेय ब्राह्मण।
प्र.48-यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ कौन सा है?
उत्तर-शतपथ ब्राह्मण।
प्र.49-सामवेद का ब्राह्मण ग्रन्थ कौन सा है?
उत्तर-साम व ताण्ड्य महा ब्राह्मण।
प्र.50-अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रन्थ कौन सा है?
उत्तर-गोपथ ब्राह्मण।
प्र.51-वेद हमें कैसे जीना सिखाते हैं?
उत्तर-सुख व शान्ति के साथ।

वेदवाणी

ब्रह्मचर्य महिमा

इयं समित् पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकाँस्तपसा पिपर्त्ति।।

-अथर्व० ११।५।४

ऋषि:-**ब्रह्मा:**।। देवता-**ब्रह्मचारी**।। छन्द:-**त्रिष्टुप्**।।

विनय-यह संसार ब्रह्मचर्य से ही पालित, पोषित और पूरित हो रहा है। इस जगत् के आधार में यदि ब्रह्मचर्य का परमवीर्य न होता, तो यह जगत् कब का समाप्त, खाली और छूना हो चुका होता, अपने शारीरिक वीर्य की, ब्रह्मतेज की और आत्मिक वीर्य (आत्म-तेज) की रक्षा करने वाले संयमी ब्रह्मचारी लोग ही हैं जो इस त्रिलोकी को निरन्तर जीवन-तेज से पूरित कर रहे हैं। ब्रह्मचारी अपने शरीर को, अपने मन को, अपनी आत्मा (विज्ञानमय) को तीन समिधाएँ बनाकर बृहद् अग्नि (आचार्याग्नि या परमात्माग्नि) में रखता है, उसके अर्पण कर देता है इसका फल यह होता है कि उसकी ये तीनों समिधाएँ प्रदीप्त हो जाती हैं-उसके शरीर में वीर्य का तेज आ जाता है, उसका मन ब्रह्म-तेज से समिद्ध हो जाता है और उसका आत्मा आत्मतेज से सूर्यवत् जाज्वल्यमान, प्रकाशित हो जाता है। शरीर की समिधा से वह स्थूल पृथिवीलोक को तृप्त और परिपूर्ण करता है, मन की दीप्ति से अन्तरिक्षलोक को पूरित करता है और आत्मप्रकाश से द्युलोक को इस प्रकार से संसार का प्रत्येक सच्चा ब्रह्मचारी अपने इस संचित, रक्षित, त्रिविध तेज (समिधा) द्वारा इन तीनों लोकों को पालित कर रहा है। मेखला का अर्थ है सदा कटिबद्ध, तैयार, सावधान रहना। आलस्य, खाली रहने की इच्छा, शिथिलता, प्रमाद ब्रह्मचारी के घोर शत्रु हैं। इसी प्रकार खूब श्रम करना, शरीर और मन से खूब काम लेकर इन्हें थका देने पर ही विश्राम ग्रहण करना-यह ब्रह्मचारी का धर्म है; आराम-पसन्द, कामचोर मनुष्य के भाग्य में ब्रह्मचर्य का सुख नहीं है। तप करना, सब द्वन्द्वों का सहना, गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास, सुख-दु:ख आदि को प्रसन्नतापूर्वक सहना-यह ब्रह्मचारी का तीसरा परमावश्यक व्रत है। कटिबद्धता, श्रम और तप के पालन द्वारा ही ब्रह्मचारी में त्रिविध तेज का (वीर्य का) रक्षण और संचय होता है और इन्हीं तीन के लगातार अनुष्ठान द्वारा ही ब्रह्मचारी अपने इस तेज का उपयोग करता हुआ लोकों का (त्रिविध संसार का, संसार के लोगों का) पालन-पोषण और पूरण करता है। इन्हीं में ब्रह्मचर्य की अपार महिमा का रहस्य है।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।